मधुर वाणी बोलने से अपने मन को सबसे पहले
शीतलता मिलती है।
सज्जनों !
सज्जनों के साथ ही यह मधुर वाणी वाली बात लागू है।
-अशोक पाण्डेय

> >
> >
> >

संसार
संसार अधिक से अधिक भौतिक सुखों के साधनों की
इच्छा है।
उनकी उपलब्धियां ही जगन्नाथ जी कृपा है।
इच्छाओं का समर्पण ही जगन्नाथ जी सच्ची भक्ति है।
आप इस नश्वर संसार को अवश्य समझें तथा जगन्नाथ जी
भक्ति में अपने मन को रमायें!
-अशोक पाण्डेय

> >
> >
> >

श्रद्धा

श्रद्धा अपने से बड़ों के प्रति आदर और सम्मान का अनूठा स्व हृदय का अच्छा भाव है जो किसी व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व से परिलक्षित होता है।
निम्न तीन आधारों, प्रतिभा,शील और साधन को लेकर हम किसी के प्रति श्रद्धा रखते हैं।
तो आइए, हमसब भी अपने अन्दर असाधारण प्रतिभा,शील और साधन को विकसित करें जिससे दूसरे भी हमारे प्रति श्रद्धा रख सकें!
-अशोक पाण्डेय

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

युवा

युवा वह है जो विद्यार्थी है। जिज्ञासु है। जो सजग है। जो सच्चाई के रास्ते पर चलता है। जिसने अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण कर लिया है। जो अपने आप को समझ लिया है। जो अपनी कमजोरियों को जानता है। जो अपने अधिकार की मांग न कर कर्तव्य को निभाता है। जो देश के शक्ति और सौंदर्य बोध से अवगत है।
जो अपने गुरु और बड़े-बुजुर्ग का सम्मान करता है। उनकी आज्ञा का पालन करता है।
-अशोक पाण्डेय

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

जीवन

जीवन एक अनबूझ पहेली है। इसे जानने और समझने के लिए मनुष्य बार-बार जन्म लेता है फिर समझ नहीं पाता है।
आदि शंकराचार्य का जीवन मात्र 32 सालों का रहा फिर भी उन्होंने 3200 वर्षों का काम कर दिया।
उन्होंने जीवन को कर्मक्षेत्र माना।
वास्तव में जीवन मुस्कुराते हुए सदा साधना-पथ पर चलते रहने है।
-अशोक पाण्डेय

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

सत्य

सत्य और असत्य आनंदमय जीवन के दो किनारे हैं।
सत्य का मार्ग कठिन है जबकि असत्य का मार्ग आजीवन दुखदाई है।
नेक इंसान सत्य मार्ग पर ही चलते हैं।जैसे सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र।

अगर आप सत्य मार्ग पर हैं,सही हैं तो उसके लिए आपको कोई भी
प्रमाण देने की जरूरत नहीं है। उचित अवसर आने पर समय खुद उसकी
गवाही दे देगा।
जीवन का आधार सच्चाई है , प्रेम है जो विश्वास पर आधारित है।
आप संकल्प लें कि आप आजीवन सत्य मार्ग पर ही चलेंगे।
-अशोक पाण्डेय

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

सच बात

शांति, विश्वास, प्रेम और आशा जिस मन में रहता है वह मन शिव भाव तुल्य है। क्षमा-दया उस पवित्र मन की वास्तविक पहचान होती है।ऐसे मन का निवास नीरोगी और स्वस्थ शरीर में होता है।शरीर उस मन की रक्षा करता है।शरीर मन, चित्त और बुद्धि को जोड़ता है।मन की ताकत से हम ज्ञान मार्ग, मुक्ति मार्ग तथा आनन्द मार्ग पर आगे बढ़ते हैं।मन करुणा और प्रेम से भरा है। इसलिए आप अपने मन को स्वतंत्र रखें। कोरोना काल में शारीरिक रूप से स्वस्थ रहें और मेरे साथ प्रेम से कहें-
जय जगन्नाथ जी

-अशोक पाण्डेय

>>

संगीत

संगीत जो हमें आनन्द देता है। चिंता मुक्त करता है। आत्मविश्वासी बढ़ाता है। चरित्रवान बनाता है। मन प्रसन्न करता है। तन-मन दोनों में सकारात्मक शक्ति पैदा करता है। इसकी तीन शाखाएं हैं: गीत, वाद्य और नृत्य । जगन्नाथ जी भी प्रतिदिन संगीत सुनते हैं। सामवेद में संगीत का विस्तृत उल्लेख है। भारतरत्न स्वर्गीया लता मंगेशकर ने तीस हजार से भी अधिक सुमधुर गीत गाकर जीवन में संगीत की उपयोगिता को अमर बना दी हैं। आप भी नित्य प्रसन्न रहने के लिए सुमधुर संगीत सुनें!
-अशोक पाण्डेय

>>

ज्ञान की खेती करें!

जीवन यापन के लिए जिस प्रकार किसान अपने खेतों में कठोर परिश्रम करते हैं। अन्नदाता किसान अपने साथ - साथ भारत को खिलाते हैं। ठीक उसी प्रकार हमारे

धर्मगुरु, संत-महात्मा भी ज्ञान की खेती करते हैं। एक बार भगवान बुद्ध भिक्षाटन के लिए एक किसान के घर पहुंचे। किसान ने कहा कि बिना परिश्रम के आप क्यों पेट भरना चाहते हैं? बुद्ध ने कहा कि वे भी ज्ञान की खेती करते हैं। आत्मा उनका खेत है।वे उसमें ज्ञान के हल से जुताई करते हैं। उसमें श्रद्धा के बीज बोते हैं। तपस्या और साधना के जल से उसे सींचते हैं। सत्य और अहिंसा से उसको पल्लवित- पुष्पित करते हैं।अगर किसान भी उनको ज्ञान की खेती के लिए कुछ भूमि देगा तो वे भी उसे ज्ञान की खेती का कुछ भाग उसे देंगे। किसान अपनी भूल समझकर बुद्ध के चरणों में गिर पड़ा।
मान्यवर आप भी ज्ञान की खेती करें!
-अशोक पाण्डेय

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

सच

ब्रह्मा जी के हृदय-कमल से धर्म का आविर्भाव हुआ।दक्ष की 10कन्याओं से धर्म ने विवाह किया। उसके चार पुत्र हुए: श्री हरि, श्री कृष्ण, श्री नर तथा श्री नारायण।इन चारों में श्री हरि और श्रीकृष्ण योगाभ्यास में लग गये और श्री नर-श्री नारायण बदरीनाथ में तपस्या करने लगे। इन्द्र को यह अच्छा नहीं लगा।उसने इनकी तपस्या भंग करने के लिए कामदेव की सहायता ली। कामदेव ने रस,गंध, वसंत

और अप्सराओं के साथ तपस्यारत श्रीनर-श्री नारायण को प्रभावित करना चाहा। लेकिन श्रीनर-श्री नारायण प्रभावित नहीं हुए। याद रखें, वहीं श्रीनर -श्रीनारायण सतयुग-कलियुग के मध्य विभाजक रेखा हैं। सतयुग में धर्म और कलियुग में अधर्म बलवान हैं।

-अशोक पाण्डेय

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

सरस्वती पूजा

मां शारदे! कहां तू वीणा बजा रही हो?
किस मंजुगान से तू ,जग को लुभा रही हो?
किस भाव में भवानी तू मग्न हो रही हो?
विनती नहीं हमारी हे मातु सुन रही हो?
हम दीनबाल कब से
विनती सुना रहे हैं,
चरणों में तेरी माता ,हम सिर झुका रहे हैं!
अज्ञानतम हमारा
मां शीघ्र दूर कर दे,
बल, बुद्धि, ज्ञान हममें ,मां शारदे तू भर दे।

साभार
मेरे स्कूल के दिनों की प्रार्थना
-अशोक पाण्डेय

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

प्रसाद

प्रसाद, प्रभु का अनुग्रह है। यह एक आध्यात्मिक संस्कार है। इसीलिए प्रसाद देने- लेने वाले में कोई संकोच नहीं होता है। प्रसाद ग्रहण करनेवाले का अंत:करण शुद्ध होता है। आत्मसंतुष्टि होती है। प्रसन्नता आती है। बुद्धि स्थीर होती है। थोड़े से प्रसाद में पूरी संतुष्टि है। इसके ग्रहण करनेवाले को सबसे पहले उसके अहंकार को त्यागना पड़ता है। सांसारिक मोहमाया का त्याग करना पड़ता है। भगवान को भोग लगाने के साथ ही भक्त का उस वस्तु से मोह हमेशा-हमेशा के लिए खत्म हो जाता है । ठाकुर जी अपने भक्त के भोग के साथ-साथ उसके अहंकार को भी खा जाते हैं। प्रसाद निवेदित करनेवाले भक्त के मन में सच्ची भक्ति और श्रद्धा अवश्य होनी चाहिए। प्रसाद जब ठाकुर को अर्पण कर दिया जाता है तो उस भक्त का मोह-माया और ममता का त्याग हो जाता है।भरतजी के लिए रामजी का प्रसाद रामजी की चरण पादुका थी।केवट के लिए उतराई के रूप में उनका पुनः दर्शन था।राजा जनक के लिए अकाल के समय वर्षा का होना तथा सीता का पाना था ।वाल्मीकि के लिए राम का प्रसाद भक्त की नाक से प्रसाद की मिठास और आत्मतृप्ति की अनुभूति है। हनुमान जी के लिए अशोक वाटिका में सीता जी की अनुमति से भूख मिटाने के लिए रावण के फल के

बाग को प्रसाद के रूप में राममय बनाने का संदेश है।
इसलिए भक्तगण प्रसाद के महत्त्व को समझें!
जय जगन्नाथ जी!
जय महाप्रसाद!
-अशोक पाण्डेय

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

गणेशजी

गणेशजी देवों में प्रथम पूज्य देवता हैं।उनकी पूजा जगन्नाथ जी (परमेश्वर)की पूजा है।उनका हाथी -सिर बुद्धि की विशालता है।ये विद्या, विवेक, बुद्धि और धन प्रदान करते हैं। शत्रुओं तथा दुष्टों का नाश करते हैं।इनकी नित्य पूजा करने से चित्त पवित्र होता है। शक्ति पुत्र भक्त जीवन में सुख की स्थापना करते हैं।ये जिनकी रक्षा करते हैं उसके पास दुख -वाधा कभी नहीं आता है।ये विघ्न विनाशक हैं। ऋद्धि-सिद्धि और बुद्धि के ये दाता हैं। मान्यवर, आपके लिए प्रतिदिन गणेशजी का पूजन, स्मरण तथा सकारात्मक सोच के साथ चिंतन-मनन सदा कल्याणकारी रहेगा।

-अशोक पाण्डेय

> >
> >
> >

जय जगन्नाथ!
(पहली फरवरी)
“सत्य तो यह है कि सभी को जगन्नाथ और सद्गुरु में अटूट विश्वास है लेकिन भरोसा नहीं है।आपसे मेरी आरज़ू है कि मान्यवर आप अपने जीवन की अनुकूल-प्रतिकूल दोनों परिस्थितियों में सद्गुरु और जगन्नाथ जी पर भरोसा भी रखना चाहिए क्योंकि उन दोनों के पास देर जरुर है लेकिन अंधेर कभी नहीं है। आज पहली फरवरी है,नये माह का पहला दिन , तो आप अपने विश्वास तथा भरोसा को आजीवन साथ रखें। सद्गुरु और जगन्नाथ जी आपका सदा मंगल ही मंगल करेंगे। शुभ ही शुभ करेंगे।”
जय गुरुदेव!
जय जगन्नाथ जी!
-अशोक पाण्डेय

> >
> >
> >

सुविचार

राग-द्वेष से ऊपर उठकर जिसका त्याग करना उचित हो उसका त्याग करें।जिसका ग्रहण करना उचित हो उसका अवश्य ग्रहण करें।

– अशोक पाण्डेय

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

सुविचार

मन बहुत ही चंचल है।इसमें निरंतर प्रवाह बनाये रखें। आप तो जानते हैं कि मन के हार है, मन के जीते जीत।मन चंगा तो कठौती में गंगा।कोरोना काल में अपने को अपने मन के साथ जोड़ें।

– अशोक पाण्डेय

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

सुविचार

आप बुद्धिमान हैं। आप कोरोना काल में भी निरोग रहना चाहते हैं । तो, प्रकृति द्वारा प्रदत्त कुल आठ डाक्टरों : वायु जो आपके शरीर के लिए अमृत है,आहार (अल्प और शाकाहारी),जल, उपवास, सूर्य, व्यायाम और निद्रा आदि

का नियमित सेवन करें।हां, सोने से पहले मन को चिंता,शोक और कोरोना के भय से मुक्त कर लें।
– अशोक पाण्डेय

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

मधुर वाणी(31जनवरी)
मान्यवर, आपके जीवन में जो सदा बने रहने का मन, वचन और कर्म से सफल प्रयास करता है उसका सदा अवश्य ध्यान रखें! उसकी आशा और विश्वास आप हैं। यह बात भूल जांय कि आप उसको क्या सहयोग करते हैं लेकिन उसने आपके साथ रहने में क्या योगदान दिया उसे सदैव याद रखें। उस व्यक्ति को आपका सहयोग प्रतिदिन नई ऊर्जा देता है।
-अशोक पाण्डेय

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

सुविचार
जीवन को सदा विनोदप्रिय बनायें जैसा कि सुकरात, चर्चिल, बर्नाडशा, लिंकन और गांधीजी ने अपने-अपने जीवन में इसे अपनाया। इसीलिए चिंता मुक्त होकर वे

महान बने।हंसने से आत्मविश्वास भी बढ़ता है। इससे आप अच्छे लोगों से जुड़ते हैं और अच्छे लोग आपसे। इसलिए मौका मिले तो हंसने-हंसाने की कला को अपनाइए। मन प्रसन्न होकर कहेगा-"जय जगन्नाथ!"

-अशोक पाण्डेय

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

29जनवरी (शनिवार)

"जिस व्यक्ति के चेहरे पर सदा मुस्कराहट होती है, वाणी में मधुरता होती है,मिठास होती है और व्यवहार में आत्मीयता होती है, उससे प्रतिदिन हर अच्छा व्यक्ति मिलना चाहता है क्योंकि उस व्यक्ति पर ज्ञान, विवेक, वाणी और विलास की देवी सरस्वती की असीम कृपा होती है। ज्ञान ही वह आधार है जिसपर यश और धन रुपी फलदार वृक्ष फलता है। इसलिए मां सरस्वती की नित्य आराधना करते हुए अच्छे लोगों के साथ रहें!

-अशोक पाण्डेय "

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

28जनवरी

“अपनी आत्मा के आनन्द के लिए सदा क्रियाशील बनें! विद्या प्राप्ति का पहला उद्देश्य यही है। साथ ही साथ अपने मन को सदा युवा बनाये रखें!जब मन युवा रहता है तो आत्मा अतिप्रसन्न रहती है।सदा यह याद रखें-मन पवित्र है। उसमें घृणा, द्वेष, वैमनस्य का कोई स्थान नहीं है।”

-अशोक पाण्डेय “

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

27जनवरी

“प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन मन से खुश रहना चाहिए जबकि व्यक्ति का अपना मन स्वार्थ और परमार्थ के मध्य संतुलन चाहता है। ऐसे में स्वविवेकी बनना जरूरी है। जगन्नाथ जी सभी को स्वविवेकी बनायें! “

-अशोक पाण्डेय

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

26जनवरी

आजाद भारत के 73वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!
जिम्मेदार नागरिक अपने देश की शक्ति और सौंदर्य बोध को समझें! व्यक्तिगत कर्तव्य समझकर राष्ट्रहित में जनसेवा करें। समाज सेवा करें।कोरोनाकाल में घर पर रहें, सुरक्षित रहें!
-अशोक पाण्डेय

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

25जनवरी (मंगलवार)
चिंता छोड़कर, चिंतन करें! गुरु कृपा से आपको आनन्द और संतुष्टि मिलेगी। आपके द्वारा किए गए प्रत्येक नि:स्वार्थ व्यक्ति सेवा, समाज सेवा और लोकसेवा के लिए खूब मान-सम्मान मिलेगा।
जय-जय श्री जगन्नाथ जी!
-अशोक पाण्डेय

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

24जनवरी (सोमवार)

जीवन में कोई ऐसा काम न करें जिससे आपका मन अशांत हो।परम शांति ही श्री जगन्नाथ जी का परम धाम है। इसलिए कोरोना काल में मन, वचन और कर्म से शांतिप्रिय बने रहें!
-अशोक पाण्डेय

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>
>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

20 जनवरी
क्या त्याग करें और क्या ग्रहण करें?
आलस्य, अधिक भोजन, अधिक बोलना, बेमतलब के काम,गलत लोगों का साथ तथा काम वासना का त्याग करें तथा अच्छी संगति, श्रद्धा, धीरज,संयम तथा आत्मविश्वास को ग्रहण करें!
-अशोक पाण्डेय